४०१/२५५

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १२ जून, २०११)

(समय : सुबह ९:०० से ११:१५)

सत्संग प्रवेश - १

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : नीलकंठ चरित्र - द्वितीय संस्करण, फरवरी - २००७

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''संध्या हो चुकी है, पशु भी पानी पीने के लिए सरोवर की ओर आते ही होंगे ।'' (४५)

२. ''प्रतिदिन दोपहर को जो चाहिए, वह खाने को मिल जाता है ।'' (२२)

३. ''गाँव के बाहर, जहाँ एकान्त स्थान पाता हूँ, वहीं रहता हूँ ।'' (११)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. मुक्तानंद स्वामीने नीलकंठवर्णी का नाम सरजूदास रखा । (९५)

२. नीलकंठवर्णी ने तोताद्रि में जिअर स्वामी को प्रश्न पूछा । (६४)

३. हाटकेश्वर महादेव के मंदिर में नागर ब्राह्मण आश्चर्यचकित रह गया । (८२)

प्र.३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) [५]

१. नीलकंठवर्णी गुजरात में (६६) २. काठमांडू में राजा को आशीर्वाद (३१) ३. धर्म का उपदेश (४०)

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. भरतकुंड के पास युगों पूर्व किस ने तपश्चर्या की थी ? (२४)

२. महादत्त राजा और उसकी बहन ने नीलकंठवर्णी को कहाँ निवास करने का अति आग्रह किया ? (२८-२९)

३. घायल लाखाने हाथ जोड़कर नीलकंठवर्णी को क्या कहा ? (७३)

४. सभी संतों तथा हरिभक्तों ने धर्मधुरा के योग्य किसको कहा ? (१०८)

५. जगन्नाथजी के पुजारी नीलकंठवर्णी को क्या देते थे ? (४८)

प्र.५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. सेवकराम (५५-५७)

(१) ☐ केवल कथाकार था । (२) ☐ नीलकंठवर्णी ने एक माह तक उसकी अपार सेवा की ।

(३) ☐ उसके पास एक हज़ार रुपये की स्वर्णमुद्राएँ थीं । (४) ☐ नीलकंठवर्णी कृतघ्नी जानकर उससे अलग हो गये ।

२. नीलकंठवर्णी ने आश्रम में कि हुई विविध सेवाएँ । (९५)

(१) ☐ गोबर उठाना (२) ☐ बर्तन माँजना

(३) ☐ पानी खींचकर साधुओं को स्नान कराना । (४) ☐ भिक्षा माँगना

प्र.६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । [४]

१. जयरामदास नीलकंठवर्णी के साथ .... की यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो गया । (४८)

२. रामानंद स्वामी ने नीलकंठवणी को गुरुमंत्र देकर 'सहजानंद स्वामी' तथा '............................' नाम घोषित किये । (१०७-१०८)

३. नीलकंठवर्णी ने .... गाँव में तेलंगी ब्राह्मण के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिये । (३४)

४. ब्रह्मचर्य धर्म की स्थापना के प्रथम सोपान के स्वरूप में नीलकंठवर्णी ने .... की सभाएँ अलग अलग की । (९२)

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग-१ - प्रथम संस्करण, जून - १९९७

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''आपने जिनके दर्शन किये वे सहजानन्द स्वामी स्वयं थे ।'' (४३)

२. ''आज माता भी हरिभक्त बन गई !'' (४०)

३. ''बचने की आशा बहुत कम है ।'' (५०)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [४]

१. झीणाभाई खुदा का सच्चा आशिक जीव है, जितेन्द्रिय पुरुष है, ऐसा लगने से नवाब साहब का आदर बढ़ गया । (२७)

२. लाडुदानजी ने भगवान से जीवन भर के लिए इन चरणों की भक्ति माँगी । (३)

(पृष्ठ पलटिये)

— — — — ✂ — — — — — — — — — — ✂ — — — — — — — — — — ✂ — — — — — —

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर ''**सत्संग प्रवेश-१**'' परीक्षा दी है। निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहि होंगी ।)

प्र.९ ‘खैया की भ्रान्ति दूर हो गई’ (७) – **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [४]

१. महाराज ने फूलडोल का महोत्सव पंचाळा में कब मनाया ? (२९)

२. निर्गुण स्वामी ने कब स्वेच्छा से देह छोड़ दी ? (५७)

३. पुरुषोत्तमपुरा गाँव में हुए नुक़सान को देखकर स्वामीश्री ने क्या कहा ? (६२)

४. जीवुबा कब धाम में पधारी ? (४७)

प्र.११ निम्नलिखित विषय के लिए सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । [६]

विषय : जोबन पगी (३५)

१. जोबन पगी ने गद्‌गद कण्ठ से महाराज से क्षमा माँगी। **२.** एक इच्छा है कि आप अन्नकूट का उत्सव यहाँ मनाइए । **३.** चिट्ठियाँ पढ़ूँ तो घर लोट ने का विचार हो जाय, इससे आपके सत्संग में बाधा पड़ जाय । **४.** श्रीजीमहाराज ने डभाण में एक बड़ा भारी यज्ञ किया । **५.** जोबन पगी ने मन्दिर के लिए अपनी जमीन दी । **६.** तन के द्वारा की गई सेवा भक्ति की अपेक्षा धन के द्वारा की गई सेवा भक्ति को मैं अधिक मानता हूँ । **७.** भस्म खतम होते ही जोबन के प्राण हमेशा के लिए शान्त हो गये । **८.** आपका भक्त होगा तो आप, बिना सिफ़ारिश के उसे सम्हालेंगे । **९.** सन्तों के समागम से जोबन पगी और उसके भाइयों को सत्संग का थोड़ा सा रंग चढ़ा । **१०.** खूँटे से खोलने वह झुका कि उसने उसके चारों ओर प्रकाश का घेरा देखा । **११.** जोबन पगी ने चेतक घोड़ा को चूराने को सोचा । **१२.** सर्वमंगल स्तोत्र में ‘हेमन्ताचार्यस्तुतिप्रीताय नम:।’ इस नाम श्रीजीमहाराज को जोबन के प्रति प्रेम का प्रमाण है ।

(१) केवल सही क्रमांक ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

(२) यथार्थ घटनाक्रम ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । (२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । [४]

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण :स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छू के काटने से धाम में गए । बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा ।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र **देसाईभाई**, **चारागाह** में **काम** करते समय **सर्पदंश** होने से धाम पधारे । बाद में **भगतजी महाराज** के साथ आकर **आशाभाई** को **जय स्वामिनारायण** बोला ।

१. **सद्‌गुरु देवानंद स्वामी :** तुम्हारे घर की देहली के पास कुमकुम के ग्यारह चरणचिह्न दिखाई दें तो मेरी बात सच मानना। (१८)

२. **स्वामी यज्ञप्रियदासजी :** एक दिन रात को अचानक चतुर्भुज विष्णु ने स्वप्न में उनको दर्शन दिये और कहा भी ‘यदि तुम कल्याण चाहते हो तो स्वामिनारायण भगवान की शरण में जाओ ।’ (५९)

३. **भक्तराज जीवुबा :** जीवुबा के दूसरे नाम नानीबा, पूर्णिमाबा और जया थे । (४४)

४. **स्वामी निर्गुणदासजी :** वे वड़ताल में थे, तब तक किसी साधु में यह हिम्मत नहीं थी कि वह प्रागजी भक्त एवं यज्ञपुरुषदास के विरुद्ध एक भी शब्द बोले । (५२)

विभाग – ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । [१०]

१. सर्वनाश करती क्रोध की ज्वालाएँ (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) जून-२००९, पा.नं. १४ से १९)

२. आदिवासीओं के जिवनघड़न में बी.ए.पी.एस. (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अप्रैल – मई – २०११)

३. सद्‌गुणसागर : प्रमुखस्वामी (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) दिसम्बर-२००९, पा.नं. ४ से ६, ९ से १३)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १० जुलाई, २०११ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।